**Hkkjr ljdkj**

**dks;yk ea=ky;**

**jkT; lHkk**

**rkjkafdr iz'u la[;k 13**

**ftldk mRrj 24 uoEcj] 2014 dks fn;k tkuk gS**

**mR[kfur dks;yk&{ks=ksa dk iquHkZj.k**

**\*13 Jh I;kjheksgu egkik= %**

D;k **dks;yk ea=h** ;g crkus dh d`ik djsaxs fd%

¼d½ mu fodflr ns'kksa ds uke D;k&D;k gSa] tgka mR[kfur dks;yk&{ks=ksa esa rki&fo|qr la;a=ksa ls fudyus okyh jk[k dk iquHkZj.k fd;k tkrk gS(

¼[k½ D;k fdlh ns'k esa blds ifj.kkeLo:i Hkwty ds iznwf"kr gksuss ds ekeys lkeus vk;s gSa vkSj ;fn gka] rks ,sls ns'kksa }kjk bl laca/k esa D;k&D;k mipkjkRed dkjZokbZ dh xbZ gS( vkSj

¼x½ Hkkjr us ,sls ns'kksa ls D;k lcd] ;fn dksbZ gks] fy;k gS vkSj blls ,slh dks;yk [kkuksa ds iquHkZj.k laca/kh n`f"Vdks.k esa fdu&fdu mik;ksa dks] ;fn dksbZ gksa] 'kkfey fd;k tk,xk\

**उत्‍तर**

**कोयला, विद्युत, एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय में राज्‍य मंत्री (स्‍वतंत्र प्रभार)**

**(श्री पीयूष गोयल)**

**(क) से (x) :** एक विवरण- पत्र सभा पटल पर रख दिया गया है।

**उत्‍खनित कोयला – क्षेत्रों के पुनर्भरण के संबंध में श्री प्‍यारीमोहन महापात्र, संसद सदस्‍य द्वारा दिनांक 24.11.2014 को पूछे जाने वाले राज्‍य सभा तारांकित प्रश्‍न सं. 13 के भाग (क) से (ग) के उत्‍तर में उल्‍लिखित विवरण।**

**(क) :** पब्‍लिक डोमेन में उपलब्‍ध सूचना के आधार पर संयुक्‍त राज्‍य अमेरिका, आस्‍ट्रेलिया जैसे कुछ देशों तथा यूरोप के कुछ देशों में कोयला खानों के उत्‍खनित क्षेत्रों का पुनर्भरण ताप विद्युत संयंत्रों से निकलने वाली उड़न राख / कोयला राख से किया जाता है।

**(ख) :** पब्‍लिक डोमेन में उपलब्‍ध साहित्‍य के अनुसार ऐसी रिपोर्टें हैं जिनमें उत्‍खनित भूमि के उड़न राख/ कोयला राख से भराव के प्रभाव दर्शाए गए हैं जैसे कि कोयला खान पुनरूद्धार, भूमिगत खानों में धंसाव की रोकथाम के लिए ढा़ंचागत सहारा तथा एसिड खान ड्रेनेज को कम से कम करना। यह भी रिपोर्ट किया गया है कि लाइमस्‍टोन/ कैल्‍शियम कार्बोनेट/सीमेंट का उपयोग करके उड़न राख/कोयला राख का मिश्रण बनाने के लिए कुछ उपाय किए जाते हैं ताकि उत्‍खनित खानों को भरने से पहले मिश्रण अपेक्षाकृत अधिक क्षारीय हो जाये और इस प्रकार भूमिगत जल पर उड़न राख की भराई का प्रभाव कम हो सके।

**(ग) :**  बड़ी मात्रा में उत्‍पन्‍न होने वाली उड़न राख को देखते हुए पर्यावरण और वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने दिनांक 03 नवम्‍बर, 2009 को एक अधिसूचना जारी की है जिसमें उन क्षेत्रों का उल्‍लेख है जिनमें उड़न राख का उपयोग किया जाना है और इसमें मात्रा की दृष्‍टि से खानों में कम से कम 25% उड़न राख का उपयोग शामिल है। इससे पहले खानों में राख से भराई की आयोजना के संबंध में अमेरिका के ऊर्जा विभाग (यूएस-डीओई) तथा अमेरिका की अंतर्राष्‍ट्रीय विकास एजेंसी (यूएस-एआईडी) द्वारा तकनीकी सहायता दी गई थी जिसके आधार पर नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन ने सिंगरौली क्षेत्र में गौरबी खानों की भराई का अध्‍ययन शुरू किया है। नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन द्वारा महानदी कोलफील्‍ड्स लिमिटेड की दक्षिण बालंदा खानों में राख भराई का कार्य वर्ष 2006 से शुरू कर दिया गया है। इसके अतिरिक्‍त नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन ने महानदी कोलफील्‍ड्स लिमिटेड की जगन्‍नाथ ओसीपी खानों की भराई के लिए अध्‍ययन शुरू कर दिया है।

---------